मधुबन ओम् शान्ति अंक 397 अगस्त 2025

पत्र-पुष्प

“परमात्म प्यार के अनुभव द्वारा सहजयोगी बनो”

(निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति बड़ी दीदियों की शुभ प्रेरणायें 25-6-2025)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, परमात्म प्यार के अनुभवी, सहजयोगी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के पावन पर्व की सभी को हार्दिक शुभ कामनायें, ढेर सारी बधाईयां।

संगमयुग के यह विशेष यादगार त्योहार, भाई बहिन के रूहानी सच्चे स्नेह का प्रतीक रक्षाबंधन और फिर सर्व के स्नेही राजदुलारे प्रथम विश्व महाराजकुमार श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव, जो सभी भारतवासी बहुत उमंग-उत्साह के साथ खूब धूमधाम से मनाते हैं। पहले मन-वचन-कर्म से सम्पूर्ण पवित्र रहने की प्रतिज्ञा करते, पावन बनते और अनेकों को पावन बनाकर स्वर्णिम युग की स्थापना में अपना सम्पूर्ण योगदान देते हैं। यह सहयोग उन्हें सहजयोगी बना देता है।

मीठा बाबा अभी हम सब बच्चों को सहजयोगी बनने की अनेकानेक विधियां बताते हैं। सहजयोग का आधार सहयोग के साथ परमात्म प्यार के अनुभवी बनना है। यह परमात्म प्यार ऐसा आनंदमय झूला है, जो इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहते वह सहजयोगी बन जाते हैं। लेकिन यह परमात्म-प्यार उन्हें ही प्राप्त होता है जो देहभान से न्यारे रहते हैं। अभी परमात्म प्यार में समाने का समय है, जितना इस प्यार में समाये रहेंगे उतना कोई भी हद का प्रभाव अपनी ओर आकर्षित नहीं करेगा। सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रह, रूहानियत की खुशबू वातावरण में फैलाते रहेंगे। कोई भी समस्या उनके समीप नहीं आ सकती है। उन्हें कभी किसी भी प्रकार की मेहनत का अनुभव नहीं होता, वे सहजयोगी स्वत: योगी बन जाते हैं। लेकिन प्यार सच्चे दिल का और नि:स्वार्थ चाहिए। जब हम कहते हैं मेरा बाबा, प्यारा बाबा - तो प्यारी चीज़ कभी भूल कैसे सकती। बाबा कहते बच्चे, तुम मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो। लव में लीन अर्थात् लगन में मगन रहने से सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

तो बोलो, मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसी लवलीन स्थिति का अनुभव करते हो ना! रोज़ आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो, तो यह परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियां, परमात्म ज्ञान दिल में फुल रहने से संसार की कोई भी व्यक्ति या वस्तु अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती। सच्चे प्यार की निशानी है ही समान बनना। तो अभी समय है बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का, इसी पुरुषार्थ की रेस करते रहो।

बाकी मधुबन की बेहद सेवाओं के समाचार तो आप सब सुनते रहते हो! इस बरसात की रिमझिम के बीच योग तपस्या के बहुत सुन्दर कार्यक्रम चल रहे हैं। अपने-अपने ग्रुप अनुसार टीचर्स तथा बाबा के सभी बच्चे खूब उमंग-उत्साह से मधुबन घर में योग तपस्या करने आ रहे हैं। सभी स्थानों पर बहुत आकर्षक रूहानियत का सुन्दर वातावरण है।

सभी स्वयं को शक्तिशाली बनाने के साथ शाम के समय पूरे ग्लोब को विशेष मन्सा सकाश देने की सेवा भी करते हैं।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद... ओम् शान्ति।

ये अव्यक्त इशारे

सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

1) परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो तो इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते रहेंगे। परमात्म-प्यार उड़ाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

2) यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींचकर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाओ तो अनेक दु:ख भूल जायेंगे और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगेंगे। बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं।

3) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती।

4) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कभी कोई परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती। परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है - न्यारा बनना। जितना न्यारा बनेंगे उतना परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त होगा।

5) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं और साथी बन सदा साथ निभाते हैं, तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो। परमात्म प्यार में ऐसे समाये रहो जो कभी हद का प्रभाव अपनी ओर आकर्षित न कर सके। सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहो जिससे रूहानियत की खुशबू वातावरण में फैल जाए।

6) बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो - मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो, दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ। श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम बाप ने आप बच्चों के हाथ में दी है, आप जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो।

7) जो प्यारा होता है, उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा - तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

8) सेवा में स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है - एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

9) कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा दो, बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो, तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी और समय बच जायेगा, मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे।

10) लवलीन स्थिति वाली समान आत्मायें सदा के योगी हैं। योग लगाने वाले नहीं लेकिन हैं ही लवलीन। अलग ही नहीं हैं तो याद क्या करेंगे! स्वत: याद है ही। जहाँ साथ होता है तो याद स्वत: रहती है। तो समान आत्माओं की स्टेज साथ रहने की है, समाये हुए रहने की है।

11) जब मन ही बाप का है तो फिर मन कैसे लगायें! प्यार कैसे करें! यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता क्योंकि सदा लवलीन रहते हैं, प्यार स्वरूप, मास्टर प्यार के सागर बन गये, तो प्यार करना नहीं पड़ता, प्यार का स्वरूप हो गये। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है, उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं।

12) परमात्म प्यार इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म का आधार है। कहते भी हैं प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान हैं। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। दुनिया एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से

पलते हो अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। तो सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।

13) कर्म में, वाणी में, सम्पर्क व सम्बन्ध में लव और स्मृति व स्थिति में लवलीन रहना है, जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। आप बच्चे बाप के लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

14) मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रह भिन्न-भिन्न प्रकार की क्यू से निकल, बाप के साथ सदा मिलन मनाने की लगन में अपने समय को लगाओ और लवलीन स्थिति में रहो तो और सब बातें सहज समाप्त हो जायेंगी, फिर आपके सामने आपकी प्रजा और भक्तों की क्यू लगेगी।

15) आप गोप-गोपियों के चरित्र गाये हुए हैं - बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख लेना और मग्न रहना अथवा सर्व-सम्बन्धों के लव में लवलीन रहना। जब कोई अति स्नेह से मिलते हैं तो उस समय स्नेह के मिलन के यही शब्द होते कि एक दूसरे में समा गये या दोनों मिलकर एक हो गये। तो बाप के स्नेह में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।

16) एक तरफ बेहद का वैराग्य हो, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन रहो, एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आओ। ऐसे लवलीन बच्चों का संगठन ही बाप को प्रत्यक्ष करेगा। आप निमित्त आत्मायें पवित्र प्रेम और अपनी प्राप्तियों द्वारा सभी को श्रेष्ठ पालना दो, योग्य बनाओ अर्थात् योगी बनाओ।

17) जो सदा बाप की याद में लवलीन अर्थात् समाये हुए हैं। ऐसी आत्माओं के नैनों में और मुख के हर बोल में बाप समाया हुआ होने के कारण शक्ति-स्वरूप के बजाय सर्व शक्तिवान् नज़र आयेगा। जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था, ऐसे आप बच्चों द्वारा सर्वशक्तिवान् दिखाई दे।

18) जो सदा बाप की याद में लवलीन रह मैं-पन की त्याग-वृत्ति में रहते हैं, उन्हों से ही बाप दिखाई देता है। आप बच्चे नॉलेज के आधार से बाप की याद में समा जाते हो तो यह समाना ही लवलीन स्थिति है, जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मग्न हो जाते हो तब बाप के समान बन जाते हो।

19) जैसे कोई सागर में समा जाए तो उस समय सिवाय सागर के और कुछ नज़र नहीं आयेगा। तो बाप अर्थात् सर्वगुणों के सागर में समा जाना, इसको कहा जाता है लवलीन स्थिति। तो बाप में नहीं समाना है, लेकिन बाप की याद में, स्नेह में समा जाना है।

20) जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देह-भान का, दिन-रात का, भूख और प्यास का, अपने सुख के साधनों का, आराम का, किसी भी बात का आधार नहीं। वे सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन रहते हैं। जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट-माइट रूप बन जाते हैं।

21) सेवा में सफलता का मुख्य साधन है - त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लग्न में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे - तपस्वी। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

22) जैसे लौकिक रीति से कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है, आशिक है, ऐसे जिस समय स्टेज पर आते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना स्नेह का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा।

23) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवन मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं - मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है 'सहज योगी जीवन'।

24) जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है। तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता, इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये... अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ। दिल से बाबा कहो और उसी प्यार में समा जाओ।

25) बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें।

26) आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार,

परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता। बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है - समान, कर्मातीत। 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म नहीं करो।

27) जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता हो, उसी सम्बन्ध से भगवान को अपना बना लो। दिल से कहो मेरा बाबा, और बाबा कहे मेरे बच्चे, इसी स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह छत्रछाया का काम करता है, इसके अन्दर माया आ नहीं सकती, यही सहजयोगी बनने का साधन है।

28) कई भक्त आत्मायें प्रभु प्रेम में लीन होना चाहती हैं और कई फिर ज्योति में लीन होना चाहती हैं। ऐसी आत्माओं को सेकेण्ड में बाप का परिचय, बाप की महिमा और प्राप्ति सुनाए सम्बन्ध की लवलीन अवस्था का अनुभव कराओ। लवलीन होंगे तो सहज ही लीन होने के राज़ को भी समझ जायेंगे।

29) आप बच्चों को ज्ञान के साथ-साथ सच्चा रूहानी प्यार मिला है। उस रूहानी प्यार ने ही प्रभु का बनाया है। हर बच्चे को डबल प्यार मिलता है - एक बाप का, दूसरा दैवी परिवार का। तो प्यार के अनुभव ने परवाना बनाया है। प्यार ही चुम्बक का काम करता है। फिर सुनने व मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। संगम पर जो सच्चे प्यार में जीते जी मरता है, वही स्वर्ग में जाता है।

30) वर्तमान समय भटकती हुई आत्माओं को एक तो शान्ति चाहिए, दूसरा रूहानी स्नेह चाहिए। प्रेम और शान्ति का ही सब जगह अभाव है इसलिए जो भी प्रोग्राम करो उसमें पहले तो बाप के सम्बन्ध के स्नेह की महिमा करो और फिर उस प्यार से आत्माओं का सम्बन्ध जोड़ने के बाद शान्ति का अनुभव कराओ। प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप दोनों का बैलेन्स हो।

31) बाप-दादा प्रेम के बंधन में बंधे हुए हैं। छूटने चाहें तो भी छूट नहीं सकते हैं, इसीलिए भक्ति में भी बंधन का चित्र दिखाया है। प्रैक्टिकल में प्रेम के बन्धन में अव्यक्त होते भी बंधना पड़ता है। व्यक्त से छुड़ाया फिर भी छूट नहीं सके। यह प्रेम की रस्सी बहुत मजबूत है। ऐसे प्रेम स्वरूप बन, एक दो को प्रेम की रस्सी में बांध समीप सम्बन्ध की वा अपने-पन की अनुभूति कराओ।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

"आत्म-अभिमानी वा अशरीरी स्थिति का अनुभव करो"

(27-08-10)

बाबा कहते हैं बच्चे अभी समय बहुत नाज़ुक आने वाला है इसलिए अपने मन पर कन्ट्रोल जरूर होना चाहिए। सेकण्ड में मैं अपने मन को आर्डर करूं कि व्यर्थ खत्म हो जाये, समर्थ चले। तो एक सेकेण्ड में हम अपने मन पर आर्डर कर सकें और उसी आर्डर के अनुसार एक सेकण्ड में हम व्यर्थ को फुलस्टाप लगा सकें, इसकी प्रैक्टिस काम करते हुए भी होनी चाहिए। हमारा पेपर अचानक होना है और अचानक किस समय कैसे भी हो सकता है इसलिए हमारे मन पर हमारा कन्ट्रोल हो तो सेकेण्ड में पास हो जायेंगे। अगर कन्ट्रोल नहीं है तो प्रयत्न करेंगे पास होने का लेकिन प्रयत्न में टाइम लग सकता है।

हमारा मूल मन्त्र है मन-मनाभव, मन अपने आर्डर में रहे और जहाँ लगाने चाहें वहाँ ही लगे, जितना समय लगाना चाहें वो आर्डर में रहे। ये है मन-मनाभव। बाबा कहते बच्चे इस मन-मनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जायेगी। तो इस मंत्र को यंत्र माफिक सेकेण्ड में मै यूज़ कर सकूं ये प्रैक्टिस बहुत-बहुत जरूरी है। बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं कि वैसे तो ठीक हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनते हैं तो डबल काम हो जाता है, उस समय हमारी प्रैक्टिस थोड़ी और होनी चाहिए। इसके लिए कर्मयोगी बनते समय सोचो कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं। तो जब अपनी सीट पर सेट होंगे, तो सीट पर बैठे हुए मालिक का सब आर्डर मानते हैं। अगर आपकी कर्मेन्द्रियां आपका कहना नहीं मानती हैं तो इससे सिद्ध है कि आप अपनी सीट पर सेट नहीं हैं। आपकी सीट है मै मालिक हूँ, अधिकारी हूँ, मालिक को तो पॉवर होती है ना, ऑलमाइटी अर्थॉरिटी हूँ। ऑलमाइटी अर्थॉरिटी का बालक हूँ, इस सीट पर सेट होके फिर कर्मयोग के टाइम ट्रायल करो तो सहज हो जायेगा।

तो इस पर हमारा अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि अचानक पेपर होना है तो कर्मयोग के टाइम भी हो सकता है। इसलिए बाबा अभी इसी प्वाइन्ट पर विशेष अटेन्शन खिंचवा रहा है। मेहनत तो हमको करनी पड़ेगी ना, सीट पर सेट हमको होना पड़ेगा इसलिए बाबा हमको कहता है बहुत समय का अभ्यास उस समय आपको काम में आयेगा। अगर बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय हम उसको कन्ट्रोल कर नहीं सकेंगे।

यहाँ हमको वायुमण्डल की मदद भी है, स्थान की मदद भी है, बाबा ने हमको भट्ठी में बुलाया है तो खास बाबा का हमारे ऊपर अटेन्शन भी है। तो बहुत सहज हम इस बात को अनुभव में ला सकते हैं।

जब आत्म-अभिमानी शब्द कहते हैं तो आत्मा के अभिमान कौन से हैं? बाबा जो हमें समय प्रति समय स्वमान बताते हैं, जैसे बाबा कहते हैं तुम विश्व परिवर्तक हो, हम आत्मा हैं लेकिन आत्मा के साथ-साथ हम ये स्वमान याद रखें, आत्मा तो लाइट है, लाइट रूप होकर हम चलते हैं लेकिन साथ में अगर स्वमान भी याद रहे तो देह अभिमान खत्म हो जायेगा। जैसे बाबा कहते हैं आप परमात्म दिलतख्त के मालिक हो, यह कितनी बात बड़ी है, अगर हम सोचें कि मैं आत्मा हूँ, आत्मा के साथ मैं कौन सी आत्मा हूँ! तो हमारी आत्मा का अभिमान ये है कि जो बाबा स्वमान देते हैं उस स्वमान में स्थित रहें और स्वमान में स्थित रहने से बहुत रमणीक हो जाता है। जैसे मैं विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, ये कितने मर्तबे की बात है। उस स्थिति में अगर हम स्थित रहें तो सारा दिन हम अलर्ट रहेंगे। जैसे डाक्टर होता है उसको अपना मर्तबा याद रहता है तो कैसे सारा दिन वो फुर्ती से अपना काम करता है। तो हमारा जो अभिमान है वो ये स्वमान है। हम अगर रोज़ अमृतवेले बाबा से मिलकर, बाबा से शक्ति लेके, बाबा से किरणें लेकर और लक्ष्य रखें कि मै आत्मा तो हूँ लेकिन कौन सी आत्मा हूँ! विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, बाबा के दिलतख्त-नशीन हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ... डायरेक्ट बाबा ने हमको अपना बनाया है, बाबा ने हमको चुना है। अगर ऐसे नये नये स्वमान हम रोज़ स्मृति में रखें और सारा दिन ऐसे व्यतीत करें, तो एक तो वैराइटी हो जायेगा और दूसरा नशा चढ़ा रहेगा। निश्चय तो है पर नशा भी हो। इससे पुरुषार्थ में रमणीकता आ जायेगी और खुशी भी रहेगी। तो आत्म-अभिमनी होकर रहने से मजा आता है। जैसे सीट पर बैठने से खुमारी होती है भले डाक्टर है लेकिन जब डाक्टरी काम में है उस समय का नशा और जब घर पर रहता है, रिवाजी हो जाता है तो फर्क तो हो जाता है ना। तो सीट पर सेट रहो जिससे हमको आत्म अभिमानी बनकर रहना या चलना बहुत सहज हो जाता है। इससे ही जो हमारे व्यर्थ संकल्प हैं वो खत्म हो जाते हैं क्योंकि हमने मन को बिजी रख दिया। मन अगर स्वमान में बिजी रहा तो व्यर्थ संकल्प भी हमारे कट हो सकते हैं क्योकि व्यर्थ संकल्पों की आदत है, तो जब भी हम एकान्त में बैठेंगे, योग में बैठेंगे या कुछ शुभ सोचने के लिए बैठेंगे, तो व्यर्थ संकल्प जरूर उसमें विघ्न डालेंगे। व्यर्थ संकल्पों के कारण ही हमारा समय भी व्यर्थ जाता है। अच्छा बात सुनी, बातें तो बाबा ने कहा आयेंगी ही। जब हमारी स्थिति कभी-कभी ढीली हो जाती है तो व्यर्थ संकल्पों को चान्स मिल जाता है। और मैजारिटी या तो व्यर्थ संकल्पों का पेपर आता है, या स्वभाव-संस्कार का पेपर आता है। लेकिन अगर हमारा मन स्वमान में स्थित है तो हम दूसरों को भी उसी स्वमान से देखेंगे। यादगार में भी देखो यह जो माला बनाई हुई है उसमें मणके सब समान होते भी नम्बरवार हैं। कहाँ एक नम्बर, कहाँ 108 वां नम्बर कितना अन्तर होगा। तो जब हमको पता है कि नम्बरवार होने ही हैं तो संस्कार भिन्न होंगे ही। जैसे मम्मा की विशेषता थी, जब किसकी रिपोर्ट मम्मा के पास जाती थी तो मम्मा उसको बुलाती जरूर थी, मम्मा की हैण्डलिंग पावर ऐसी अच्छी थी, जो हमको भी सीखना चाहिए। मम्मा कहती थी देखो हरेक में कमियां तो हैं, जिसकी कमी हमको दिखाई देती है उसकी चाल-चलन का प्रभाव पड़ता है। कमियां हैं लेकिन लास्ट बाबा का बच्चा भी बाबा को प्रिय है, क्यों उसमें विशेषता क्या है? भले धारणा नहीं है, उसमें विशेषता ये है जो बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य साधारण तन में आये हुए बाप को नहीं पहचान सके लेकिन इस बच्चे ने बाप को पहचान कर मेरा बाबा तो कहा। विशेषता हुई ना! तो मम्मा पहले उनकी विशेषता वर्णन करती थी, बच्ची आप में यह यह विशेषता है, तो उन विशेषताओं के आगे ये छोटी सी बात क्या है! तुम ऐसी हो, तुम ऐसी हो, ये नशा चढ़ा देती थी। तो मम्मा के आगे जाने से कोई डरता नहीं था। जैसे बाबा ने कहा था तुम सिर्फ शिक्षा नहीं दो, हम समझते हैं ये गलती करती रहती है इसको समझायेंगे नहीं तो कैसे होगा, लेकिन बाबा ने कहा शिक्षा के साथ सहयोग और स्नेह दो। जैसे रास्ते पर कोई गिरा हुआ हो तो आप क्या करेंगे, उसको और ही लात मारकर जायेंगे या उसको उठायेंगे! तो जो अपनी मंजिल से गिर गया, उस समय अगर उसको सहारा नहीं देंगे, सहयोग नही देंगे, तो उस समय तो वो और ज्ञान की बात समझेंगे नहीं। तो ये अटेन्शन देना है कि हम उसको सहयोग भी देते हैं, स्नेह भी देते हैं और शिक्षा भी देते हैं! अगर आत्मा का पाठ हमको पक्का करना है तो इसके लिए हमको ये बातें भी ध्यान में रखनी पड़ेंगी क्योंकि क्या होता है! हम किसकी गलती जब देखते हैं तो उस समय चलता है कि इसको शिक्षा तो मिलनी चाहिए। ये तो होना चाहिए ना। लेकिन जैसे मम्मा उसको पहले हिम्मत दिलाकर पीछे उसके आगे छोटी बात रखती थी कि ये क्या है.., ये भी थोड़ा करेक्शन करेंगी तो अच्छा है। इसी रीति

से हमारी भावना अगर एक दो के प्रति सहयोग देने की है, तो मैं समझती हूँ कि जो प्रॉब्लम आती हैं, भाव-स्वभाव की वो भी खत्म हो सकती हैं।

तो मम्मा बाबा ने जो शिक्षा देने की विधि सिखाई है वह अगर हम प्रैक्टिकल लाइफ में लायेंगे तो आत्म-अभिमानी बनकर रहना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि ये तो नशे की बात है। निश्चय से नशा, नशे से खुशी।

अशरीरी स्थिति का अनुभव अमृतवेले बहुत पावरफुल हो सकता है और कार्य करते हुए भी जब आत्मा अक्षर आता है, तो आत्मा का ओरीज्नल रूप हमारा है अशरीरी आत्मा। लेकिन इसके लिए बीच-बीच में विशेष अटेन्शन देना पड़ेगा। अशरीरी बनने के लिए आत्मा का स्वरूप सामने लायें। इसमें अटेन्शन रखना पड़ेगा।

अभी-अभी बाबा ने एक मुरली में कहा था कि बच्चे कोई भी व्यर्थ संकल्प या नीचे गिरने की बातें आती हैं तो आप अटेन्शन रूपी पहरा अपना ठीक रखो। और जब कोई आपको टेन्शन आता है तो टेन्शन के आगे ए लगा दो। तो टेन्शन बदल करके अटेन्शन हो जायेगा। बीच-बीच में समय निकालकर भी अशरीरी बनने का अभ्यास करो और विशेष नुमाशाम का समय जो मुकरर है, उसमें भी इसकी प्रैक्टिस करो। मन के मालिक बनके मन को आर्डर करो तो मन मानेगा। अशरीरी बनने के लिए ताकत चाहिए। अच्छा

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“ज्ञान सागर अन्दर गया है तो स्थिति सदा निंदा-स्तुति, मान-अपमान में समान रहेगी” (03-10-06)

बाबा की मुरली सुनने के बाद हमारा दिल कहता था कि बाबा से चिटचैट करें, बाबा भी कहता है मुरली के बाद आपस में मुरली रिवाइज करो क्योंकि तुरन्त रिवाइज करते हैं तो दिन भर याद रहती है। यह मुरली के बाद बाबा के पास बैठने से पता चलता था कि बाबा मुरली सुनाके कैसे न्यारा हो जाता है। पूछने पर कहता था कि कल्प पहले सुनाया था, फिर कल्प के बाद सुनाऊंगा। बच्ची, गोल्डन वर्सन्स नेवर रिपीट। अपने को कितना अच्छा शिक्षक मिला है, कितनी मीठी मीठी बातें सुनाता है। अन्दाजा लगा के देखो, इतना प्यारा बाबा सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा।

रूखेपन का संस्कार भी बहुत खतरनाक है। रूखे रहेंगे, समझेंगे काम में बहुत बिजी हूँ या फिर अभिमान बिजी कर देता है। रूखेपन में कितना नुकसान है। तो रूखी रोटी खाके सूखा हो गया वो औरों को क्या सुखी करेगा। किसी भी गुण की वैल्यू बहुत है। बाबा ने ऐसा खजाना दिया है, जो आत्मायें बाबा के घर आकर माला-माल हो जायें।

चार बातें हमारे अन्दर स्पष्ट है, जो बाबा कहते थे बच्चे ज्ञान ऐसा है जैसे अन्धे के आगे आइना। हो अन्धा, आइने के सामने आये तो देखेगा कैसे! पर यह आइना ऐसा है जो अन्धा भी देख सकता है। ऐसा पावरफुल आइना हो जो दूसरों को कुछ कहे नहीं, अपने आप अपने को देखने लग पड़े, न सिर्फ देखने लगे, बनने लग पड़े। चार बातें हैं, भावी के साथ भाग्य, भगवान और समय। चारों का मेल है। भगवान ने बताया अभी तेरी यह भावी बनी पड़ी है। बाबा कितना अच्छा है सोचो तो सही। फिर बाबा कहेगा तू कितनी अच्छी हो। बाबा आप कितने सुन्दर हो, सुन्दर इतना है जो हमें काले से सुन्दर बना देता है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। हम तो झूठे बन गये थे, बॉडी कान्सेस बन गये थे। आत्म अभिमानी बनाकर ऐसा पकड़ा है जो पुराने स्वभाव-संस्कार से छूट गये।

तो भावी बनी पड़ी है, पर बनानी भी है, यह समझ दी है। ऐसे नहीं जो बना हुआ होगा। अभी यह टाइम है बनाने का। तो चारों में से महिमा किसकी ज्यादा करें? समय, भगवान, भावी या भाग्य। जिसने ज्यादा भक्ति की है वो पहले बाबा से मिलता है। फट से मिलता है। कर्म तो हमें गर्भ तक भी नहीं छोड़ते हैं। यहाँ से भल शरीर छोड़ा, पर गर्भ के बाहर भी निकलेगा तो उसी कर्म के अनुसार निकलेगा। बाबा ने समझाया है कि अभी कर्म का हिसाब-किताब खत्म करो, नहीं तो गर्भ तक भी हिसाब-किताब नहीं छोड़ेगा। सदाकाल का सुख, अविनाशी सुख जो बाबा दे रहा है वो सुख अपने आप सफलता पाने के लिए है। किसी के साथ द्वेष भाव रहने में कोई सफलता नहीं है। ऐसे नहीं कि जो हमारी प्रशंसा करे वो हमारा मित्र है और जो निन्दा करे वो शत्रु है। नहीं। निन्दा-स्तुति, हार-जीत में समान बनें, तब कहेंगे ज्ञान

अन्दर गया है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। ऐसी याद जिससे मान-अपमान, निंदा-स्तुति में समान रहें। जिसका नाम लो उसके अनुसार नैन, चैन हो जायें यह कोई ज्ञान नहीं है।

हमारा पहला गीत था कि इस पाप की दुनिया से दूर कहीं ले चल। चित चैन जहाँ पाये। बेचैनी ऐसी होती है, समझ में ही नहीं आता है कि मरूं तो कैसे मरूं, जियूँ तो कैसे! पर चित चैन जहाँ पाये दूर कहीं ले चल। इस गीत ने सबको खींचा है। कितना मीठा गीत है, चित पर सारा आधार है। चित जिसका शुद्ध शान्त है उसे बड़ों की शिक्षायें प्यारी लगती है। जो फरगिव करना (माफ करना) नहीं जानता है, उसका भगवान भी कैसे फरगिव करेगा। अभिमान वश मैं कहूँ कि इसने ऐसा किया है! मेरा भी तो कोई पाप है। अगर मैं औरों को माफ नहीं कर सकती हूँ, तो भगवान भी नहीं करेगा। भगवान भी हठीला है।

बाबा प्यार से मुस्कराकर दुआयें देता है, बल देता है। जिसने जो व्यवहार किया मेरे को सिखाने के लिए किया, इससे आत्माओं के प्रति मेरे में द्वेष तो नहीं पैदा हुआ। वो आत्मा दोषी नहीं है, मेरे अन्दर द्वेष आ गया तो दोषी मैं हुई। बाबा जैसे आप भोले हो, मैं भी भोली रहूं। ऐसे नहीं माया मुझे भोला बना दे। ऐसी अपनी आँख खुले जो अंधकार चला जाये, जब मेरा अंधकार खत्म होगा तब दूसरी आत्माओं का अंधकार मिटेगा और आँख खुलेगी, तब कहेंगे ये कौन हैं और किसके हैं।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“हमारी जीरो स्थिति ही हमें हीरो बनाती है”

(1989)

1) हम बच्चे इतने पद्मापद्म भाग्यशाली हैं, जो हमारे कदम-कदम में पद्म हैं। स्वयं भगवान हमारे भाग्य का गायन करता है। तो सोचो हम कितने भाग्यवान हैं। अपने आपके भाग्य की स्वयं ही सराहना करो। अगर स्वयं अपना भाग्य देख हर्षित रहेंगे तो कभी गम नहीं आयेगा। यह भी सोचो कि हमें भाग्यवान क्यों कहा? क्योंकि हम सभी हीरो-हीरोइन हैं। जो ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्टधारी होते हैं, उनके ऊपर ड्रामा के डायरेक्टर का विशेष अटेन्शन होता है। उनकी वैल्यु को भी जानते हैं, क्योंकि सारे फिल्म की आकर्षण हीरो-हीरोइन पार्टधारी पर होती है। उन्हें सब बातों की एक्टिंग करना आती है। राजा का भी पार्ट एक्यूरेट बजायेगा तो दास-दासी का भी पार्ट एक्यूरेट बजा लेगा। वह एक्टिव और आलराउण्ड होता।

2) हीरो पार्टधारी माना हर बात का अनुभवी, जानकार। तो हम आप सभी सारे कल्प के अन्दर हीरो-हीरोइन हैं। संगम पर बाबा हमें इतना महान बनाता है, एक्टिव बनाता है जो सारे कल्प में हम महान रहते हैं। अभी हम सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ते, बाप की सारी नॉलेज को स्वयं में धारण करते, बाप के समान बनते हैं, यह भी हम सभी का पार्ट है। जैसे बाप स्वयं जीरो है, ऐसे हमें भी जीरो बनाकर हीरो बनाता है। जैसा बाप वैसे हम बन जाते हैं। बाप समान निराकारी बनने का, फिर निराकार बाप को प्रत्यक्ष करने का भी हमारा पार्ट है। सर्विस करके बाप को प्रत्यक्ष करने का भी पार्ट है। स्वर्ग की नई राजधानी स्थापन करके सूर्यवंशी घराने की प्राइज़ लेने का भी पार्ट है। महाराजा-महारानी वा रॉयल फैमिली की विजयी माला बनने का भी पार्ट है। फिर द्वापर से लेकर आपेही पूज्य, आपेही पुजारी बनने का पार्ट है। फिर अन्त में सारी नॉलेज को धारण करके मास्टर नॉलेजफुल बनने का भी हमारा पार्ट है। ऐसे हैं हम हीरो पार्टधारी।

3) इस ड्रामा में आदि से अन्त तक हम हीरो हैं। संगम पर हमें बाबा लाइट का ताज देता, शक्तियों की माइट का भी ताज देता। हम आधाकल्प डबल ताजधारी रहते हैं। इस समय हम गरीब निवाज़ बाबा के बच्चे हैं। लेकिन हम हैं डबल ताजधारी। दुनिया वाले चिंताओं में रहते, और हम ज्ञान रत्नों से भरपूर होकर खुशियों के गीत गाते। तो क्या आप सब अपने को ऐसा हीरो समझते हो? वैसे भी हीरे का दाम बहुत होता है। हीरो बनना है तो अपनी स्थिति जीरो बनाओ। तो एक तो हम सच्चे हीरो (डायमण्ड) हैं दूसरा हम हीरो पार्टधारी हैं। जिस घड़ी जो पार्ट है - उसे एक्यूरेट बजाओ। आकर्षण वाला बजाओ। लेकिन पार्ट बजाते भी साक्षी रहो। साक्षी दृष्टा होकर पार्ट बजाने का बैलेन्स रखो। सारी नॉलेज को ऐसा ग्रहण कर लो जैसे कहते हैं चिड़ियों ने

सागर को हप किया। जो सारी नॉलेज को हप कर नॉलेजफुल बनता उसे किसी भी बात में शंका नहीं होती। ज्ञान सागर बाबा हमें रोज नई-नई प्वाइंट्स सुनाकर खजाने से भरपूर करता है।

4) हम सबका प्यार नॉलेज से, पढ़ाई से हो। जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका विचार सागर मंथन भी चलता है। उसे नशा रहता है कि हम कितने बड़े जौहरी हैं। बड़े से बड़े हीरे भी हमारे पास हैं तो छोटे से छोटे हीरे भी हमारे पास है। कोई भी हमारे पास आये तो हम उसे ज्ञान रतनों की ज्वेलरी पहना सकते हैं। जिसके पास सच्चे हीरों की ज्वेलरी होगी उसकी झूठे हीरों पर नजर नहीं जा सकती। इसलिए बाबा कहते दुनिया की झूठी जवाहरात को, अथवा बातों को देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो। क्योंकि हमें सच्चे जवाहरात मिल गये। बाबा ने हमें जवाहरात से सजाया है। ज्ञान रत्नों की ज्वेलरी से हमें खूब सजाया है। हमें सर्वशक्तिमान् बाबा ने सर्वशक्तियां दी हैं। सबसे बड़ी शक्ति हमें बाबा ने प्रेम की दी है। एक बाप के सब बच्चे हैं, इसी एक दृष्टा ने हमें प्रेम की मूर्त बनाया है। दुश्मन को भी दोस्त बना दिया है।

5) ब्राह्मण अर्थात् बी.के. कभी यह नहीं कह सकते कि यह मेरा दुश्मन है। दुनिया की भाषा में है कि यह विपक्ष का है, हमारी भाषा में न पक्षपात है, न दुश्मनी है। दुनिया विनाश के साधन बनाने वालों को दुश्मन समझती लेकिन कल्याणकारी बाबा कहते कि ड्रामा के अन्दर जो कुछ बना है यह सब कल्याणकारी है। भल लोग बाबा की ग्लानी करते, बाबा समझानी देगा लेकिन फिर कहेगा यह भी ड्रामा। तो हमारी दृष्टि सबके लिए कितनी प्रेम भरी, रहम भरी चाहिए। बाबा का हम बच्चों से दिल का प्रेम है, इसलिए दिल में आता बाबा की हम सर्विस करें। दिन-रात अथक होकर सेवा करते, तन-मन-धन लगाते। अन्दर से रहम आता जो राह भटक रहे हैं, उनको राह बतायें। सभी को बाबा का यह सन्देश दें कि आओ हम सब मिलकर बेटर वर्ल्ड बनायें। तो अपनी वर्ल्ड समझकर सर्विस करते।

6) बाबा ने हम बच्चों को सर्विस का भी बहुत अच्छा खिलौना दिया है। कोई को भी सर्विस के बिगर चैन नहीं पड़ता। लेकिन सर्विस में कभी-कभी नाउम्मींदी भी हो जाती है। बहुत मेहनत करने पर भी रेसपाण्ड नहीं मिलता तो सोचते पता नहीं क्या हमारी कमी है। यह नहीं सोचते हैं कि कितना हमने बीज डाला है, वह बीज कभी जा नहीं सकता इसलिए सर्विस में कभी नाउम्मींद नहीं बनो।

समर्पित जीवन की कुछ निशानियां

1) जिसने अपनी जीवन बाबा को समर्पित कर दी उसे सूक्ष्म में भी यह संकल्प नहीं आ सकता कि पता नहीं अन्त तक चल सकूंगी या नहीं। अगर सूक्ष्म में भी यह संकल्प आता तो यह बड़ी माया है। संकल्पों में दृढ़ता है तो कमजोर संकल्प उठ नहीं सकते।

2) समर्पित आत्मा के लिए बुरा बोलना, बुरा देखना तो दूर रहा लेकिन बुरा सोचने का संकल्प भी नहीं आ सकता। उन्हें तो बस एक ही लगन है कि हमें अपनी बैग बैगेज कम्पलीट हिसाब-किताब चुक्तू करके बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

3) हमारा एक एक कदम सारे विश्व से सम्बन्धित है। हम यज्ञ के किले की एक एक ईट हैं। अगर एक ईट भी गिरी तो सारी दीवाल हिला देगी। साधनों में वृत्ति गई तो साधना टूट जायेगी। जो बाबा को समर्पित हो गये, उनका जवाबदार बाबा है। वह कभी पैसे के पीछे नहीं भागते, कोई भी प्रकार का बिजनेस आदि भी नहीं कर सकते। उन्हें खिलाने वाला, पहनाने वाला, सुलाने वाला बाबा है, इसलिए वे सब प्रकार के चिंतन और चिंताओं से मुक्त रहते हैं। उनके लिए तो कहा जाता - सफेद कपड़ा, जेब खाली... वह है विश्व के मालिक।

4) समर्पित माना हर संकल्प श्रेष्ठ, शुद्ध पावन हो तब हमारी भावनाओं का असर दूसरों पर पड़ेगा। हम एक एक ऊंचा बनें तो किला मजबूत होगा। पवित्र संस्कार रखने से वायब्रेशन फैलते हैं। अगर एक को भी तूफान आता है तो वह सोचे कि हमारे वायब्रेशन सारे किले में फैल रहे हैं। अगर इतनी जवाबदारी समझे तो तूफान खत्म हो जायेगा। हमारा एक पावरफुल शुद्ध संकल्प पूरे किले को मजबूत बनायेगा।

5) मेरे ऊपर अगर कोई विशेष खर्चा होता तो यह भी मेरे खाते में जमा होता है। मेरे ऊपर इतना ही खर्च होना चाहिए जितना अनुकूल है। अगर किसी भी आदत के कारण कोई विशेष खर्च होता तो यह भी बोझ चढ़ता। जिसने पाई-पाई जमा करके दान दिया उसका जमा हो गया और मैंने अपने प्रति यूज़ किया तो मेरे खाते से ना (घाटा) हो गया।

6) हमें अपने संकल्प उतने खर्च करने हैं जिससे सारे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। ऐसा न हो मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्ब करें, इसका भी कई गुणा हिसाब बनता है। मेरी एक की स्थिति खराब हुई तो उसका असर बहुतों पर पड़ता है। मेरे को देख दूसरे भी सीखते तो उसका वायुमण्डल जो बनता उसके निमित्त भी मैं बनी। जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती तो मेरे को देख सब सीखते हैं तो मेरा उसमें जमा हो जाता। मेरे त्याग ने दूसरों में त्याग पैदा किया तो मेरा संग तारने वाला बना। अच्छा।